

stigen Zustandes beim Jogin Verz. d. Oxf. H. 235, b, 33.
 अतिप्रूय (अ^० + प्रू) m. ein gar zu Heldenmüthiger Spr. 3420.
 अतिपङ्क (von सङ्ग mit अति) m. इन्द्रस्यातिपङ्कः, इन्द्रस्यातिपङ्कः पा-
 र्जन्यः und इन्द्रस्यातिपङ्को रौद्रः Namen von Sāman Ind. St. 3, 208, a. —
 Vgl. अतीपङ्क.
 अतिसक्ति (अ^० + स^०) f. grosse Nähe von und zugleich innige Nei-
 gung zu (instr.) Çiç. 9, 7.
 अतिसक्तिमत् (vom vorherg.) adj. zu sehr hängend an: विषयेषु Spr. 4629.
 अतिसंधान HALĀJ. 4, 63.
 अतिसमीप (अ^० + स^०) adj. allzu nahe; davon nom. abstr. ०ता f. all-
 zugrosse Nähe Çiç. 9, 81.
 अतिसर्ग Z. 3 lies 3, 53. MBH. 1, 1075 st. 8, 53.
 अतिसर्जन 1) Śā. zu RV. 7, 18, 23.
 अतिसर्पण (von सर्प mit अति) n. heftige Bewegung (des Kindes im
 Mutterleibe): गर्भसंक्रमणे चापि मर्मणामतिसर्पणे (so die ed. Bomb.) | ता-
 दृशो मेव लभते वेदना मानवः पुनः || MBH. 14, 472.
 अतिसर्व mehr als vollständig Ait. Br. 8, 7.
 अतिस्तन (अ^० + स्तन) adj. von der Brust entwöhnt ÇĀṆBH. Br. 13, 2.
 अतिस्वर und अतिस्वार्य Bez. eines Svāra Ind. St. 8, 261.
 अतीकाश (von काश mit अति) m. 1) Schein: ननत्राणां मातृकाशात्पा-
 किं TS. 1, 2, 2, 2. KĀṬH. 2, 3. साती^० ÀÇV. GRH. 3, 9, 1. — 2) (das Durch-
 scheinende) Oeffnung, Zwischenraum TS. 6, 1, 1, 1. Ait. Br. 8, 12.
 अतीत m. N. einer Çiva'itischen Secte WILSON, Sel. Works 1, 68.
 204. 238.
 अतीतवचन (अ^० + व^०) m. N. pr. eines Fürsten TĪRANĪTHA 200.
 अतीन्द्रिय 1) KAP. 2, 23. Spr. 3413. ज्ञान BUĀSHĀP. 37. क्षणेनातीन्द्रिया-
 एषो च नृस्यासन् so v. a. Uebersinnliches schauend MBH. 3, 16478. Da-
 von nom. abstr. ०त्व n. TATTVA. 17.
 अतीर्थ s. तीर्थ.
 अतीव 1) अतीव स ज्ञायते ज्ञातिमध्ये महामणिर्ज्ञात्य इव प्रसन्नः so v. a.
 den erkennt man alsbald inmitten der Verwandten MBH. 3, 1090. — 2)
 mit dem ablat.: त्रिभर्ति वेगं पवनादतीव er besitzt eine grössere Ge-
 schwindigkeit als der Wind Spr. 2047.
 अतीपङ्क n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 202, a. — Vgl. अतिपङ्क.
 अतुल्य m. Bez. des Sāvāna-Jahres (zu 360 Tagen) WEBER, Nax. 2, 281.
 अतृप्त (3. अ + तृप्त, adj. unersättlich; davon ०ता f. Unersättlichkeit
 Çiç. 9, 64.
 अनोनिमित्तम् vgl. कुतोनिमित्त.
 अत्क 2) etwa auch Schleier. RV. 10, 123, 7. = आगुध (nach Śā.) 6, 33, 3.
 अत्पंक्ते (अति + अंक् = अंक्त्स्) m. N. pr. eines Manues TB. 3, 10, 3.
 अत्यग्निष्टेम lies: so heisst die zweite der sieben Grundformen (संस्या)
 des Soma-Opfers, mit 15 statt 12 Çastra; vgl. Schol. zu KĀṬH. Ç. 10,
 7, 11. Verz. d. Oxf. H. 30, b, 9. 266, b, 39. Z. 4 ist 10, 9, 28 st. 10, 9, 27 zu lesen.
 अत्यग्र (अति + अग्र) adj. dessen Spitze übersteht TS. 2, 6, 5, 4.
 अत्यस्त. ०म् adv. beständig, ununterbrochen: व्यत्ययो क्षयमत्यस्तं पत्नयोः
 प्रुक्तकृत्तयोः Spr. 3039. परिदृश्यकारिणां धीरमत्यस्तं श्रीनिषेवते 2738.
 अत्यस्तगत für immer fortgegangen RAH. 8, 55.
 अत्यस्तशकरी (अ^० + श^०) f. N. der Dākshajānti Verz. d. Oxf. H. 39,

b, 24 (०शकरी, im Index aber ०श^०).
 अत्यस्ताभाव TARKAS. 4, 37.
 अत्यम्बुपान (अति - अ^० - पान) n. zu vieles Wassertrinken Spr. 3418.
 अत्यय das Hinübergehen: अत्यय ÇAT. Br. 13, 8, 1, 2. — Z. 18 lies
 अत्ययमत्ययतो. — Vgl. डुरत्यय, निरत्यय, महत्यय.
 अत्यर्थ (अति + अर्थ) m. विश्वामित्रस्यात्यर्थः N. eines Sāman Ind. St.
 3, 237, a.
 अत्यादर, instr. अत्यादरेण überaus dringend: पृष्ट PAṆĀT. in Gött.
 gel. Anz. 1860, S. 731. अत्यादरपर recht vorsichtig Spr. 3419.
 अत्याधान n. = अत्यय HALĀJ. 4, 69. — Vgl. 1. धा mit अत्या.
 अत्याप्ति lies 11, 7, 22 st. 11, 9, 22.
 अत्यारोह (अति + आ^०) m. allzuhohe Steigen, das zu-hoch-hinaus-
 Wollen Spr. 1739, v. l. KAPĀS. 1, 30.
 अत्यार्य (अति + आर्य) adj. gar zu ehrenhaft Spr. 3420.
 अत्यासन (अति + आ^०) adj. gar zu nahe Spr. 67.
 अत्यासारिन् (अति + आ^०) adj. übermässig zuströmend TS. 2, 6, 3, 4.
 अत्याहित vgl. 1. धा mit अत्या.
 अत्युक्त n. und अत्युक्ता f. (अति + उ^०) ein best. Metrum Ind. St. 8.
 283. fg. अत्युक्था 283, N.
 अत्युक्ति PRAB. 24, 5 (Aufschneiderei). Spr. 68. eine best. rhetorische
 Figur KĀVJĀD. 1, 92. KUALAJ. 134, a.
 अत्युक्था s. u. अत्युक्त.
 अत्युय 1) उलूक PAṆĀT. III, 76. रातस VID. 313. भय R. 3, 30, 6. शास्त्र-
 धारणा MBH. 3, 7301. कृद्यवृत्तेरभिमत् Spr. 4183.
 अत्युच्छ्रित (अति + उ^०) adj. zu hoch gestiegen Spr. 70.
 अत्युत्सेक (अति + उ^०) m. allzugrosser Hochmuth Spr. 3422 (Conj.).
 अत्युदात्त (अति + उ^०) adj. stark hervorragend: ०गुणा Spr. 3423.
 अत्युद्य s. अनत्युद्य.
 अत्युन्नत (अति + उ^०) adj. sehr hoch: ०स्तनमुरः Spr. 3424.
 अत्युन्नति (अति + उ^०) f. allzugrosse Höhe Spr. 3425 (Conj.).
 अत्येतु vgl. डुरत्येतु.
 1. अत्र 2) hier so v. a. hier auf Erden, hier im Leben MBH. 3, 13229.
 Spr. 3938. — अत्रा VS. 3, 119. — Sp. 113, Z. 6 lies 112 st. 122.
 2. अत्र Z. 3 lies 9, 7, 16 st. 9, 12, 16.
 अत्रत्य (von 1. अत्र) adj. hiesig, hier wohnend RAH. 13, 72. KAPĀS.
 49, 198. DAÇAK. in BENF. CHR. 186, 18. MALLIN. zu KUMĀRAS. 6, 44.
 अत्रभवत् HARIV. 8216 (f.). PRAB. 2, 17, wo mit dem zweiten Schol.
 अत्रभवद्भिः st. तत्र^० zu lesen ist.
 अत्रिकाश्रम n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 73, b, 28.
 1. 2. अत्रिज्ञात vgl. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 23.
 अत्रितनूभव (अ + त^०) m. Atri's Sohn d. i. Ātreja Verz. d. Oxf. H.
 323, a, No. 763, Çl. 4.
 अत्रिन् URĀDIS. 4, 68.
 अत्रिनेत्रप्रसूत (so zu lesen).
 अत्रियुत्र (अ^० + पुत्र) m. Atri's Sohn d. i. Ātreja Verz. d. Oxf. H.
 303, a, No. 741. fg.
 अत्री adj. f. essend, fressend TS. 6, 4, 10, 4. 5. Wohl f. zu अत्र.
 अत्रीश्वर (अत्रि + ई^०) n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 64, a, 12.